47

एक सम्पूर्ण योजना–तो क्या हुआ?

(1े:14–21)

क्या आपने कभी योजना बनाई है, ऐसी योजना जो सम्पूर्ण लगती हो, फिर वह योजना पूरी न हो पाई हो ? हो सकता है कि आपको आवश्यक सामग्री न मिली हो। शायद आप सहायता के लिए दूसरों की ओर देख रहे थे, परन्तु वे अपना योगदान नहीं दे पाए। हो सकता है कि आपको पता चला कि आप उस योजना के अनुसार जो आपने बनाई थी, काम करने में असमर्थ हैं। मैं हमेशा योजना बनाता रहता हूं; परन्तु आमतौर पर पाता हूं कि किसी न किसी कारण मेरी आरम्भिक योजना (योजना क) काम नहीं करती। फिर मुझे योजना ख, ग या घ बनानी पड़ती है।

अब तक अपने अध्ययन में हमने पौलुस को बार–बार इस बात पर ज़ोर देते देखा है कि धर्मी ठहराया जाना विश्वास के आधार पर है, परन्तु विश्वास दिलाने वाली घटनाओं की शृंखला क्या है ? रोमियों 10 के अन्तिम भाग में पौलुस ने लोगों के मनों में विश्वास पैदा करने की परमेश्वर की योजना की रूपरेखा दी। क्योंकि यह परमेश्वर की योजना है, इसलिए आवश्यक रूप में यह एक सम्पूर्ण योजना है। यहां एक सवाल खड़ा होता है कि यदि योजना सम्पूर्ण है, तो हर कोई इस पर विश्वास क्यों नहीं करता ? इसका उत्तर यह है कि इस योजना में एक मानवीय तत्व है। परमेश्वर की योजना सम्पूर्ण है, परन्तु वह इसे स्वीकार करने के लिए किसी को विवश नहीं करता। लोग चाहें तो इसे मान सकते हैं और चाहें तो इसे नकार सकते हैं।

हमारे वचन पाठ में पौलुस ने विशेषकर यहूदियों द्वारा परमेश्वर की योजना को ठुकराने पर चर्चा की। परन्तु इस वचन का अध्ययन करते हुए हमें अपनी सोच को इस्राएल की सोच से नहीं मिलाना चाहिए। हम सब के लिए इन आयतों में सबक हैं।

परमेश्वर की योजना (10:14-17)

सम्पूर्ण योजना (आयतें 14:17)

रोमियों 10 का पिछला भाग इस वाक्य के साथ समाप्त हुआ था, ''यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उद्धार है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा'' (आयतें 12, 13)। ''प्रभु का नाम लेने'' की आवश्यकता से आरम्भ करते हुए पौलुस ने परमेश्वर द्वारा आरम्भ की गई शृंखला की उलट दिशा से रूपरेखा दी: ''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें ? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें ? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें ? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें ?'' (आयतें 14, 15क)। इनमें से प्रत्येक प्रश्न का सांकेतिक उत्तर है कि ''वे नहीं कर सकते।'' पौलुस ने अपने प्रश्नों की शृंखला के बाद इन शब्दों को जोड़ा:

> जैसा लिखा है, कि उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!

> परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया: यशायाह कहता है, कि हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति की है? सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है (आयतें 15ख-17)।

रोमियों 10:14-17 में हम मनुष्यजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा बनाई गई योजना के कुछ बुनियादी तत्व पाते हैं। आइए कुछ पलों के लिए यह देखें कि इस योजना के लिए क्या ज़रूरी है। अपनी रूपरेखा के लिए हम मुख्यतया 14 और 15 आयतों का इस्तेमाल करेंगे, परन्तु शर्तों को कालक्रम के अनुसार रखने के लिए हम वचनपाठ के प्रबन्ध को उलटा करेंगे।

(1) *परमेश्वर की योजना का आरम्भ ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार होता है।* आयत 15 में हम पढ़ते हैं, ''और यदि *भेजे* न जाएं तो कैसे प्रचार करें?'' आम तौर पर हम इस प्रश्न का इस्तेमाल मिशनरी प्रयासों के सम्बन्ध में करते हैं: ''यदि भेजे न जाएं [हमारे द्वारा], तो कैसे प्रचार करें [किसी देश में]?'' यह एक मान्य और महत्वपूर्ण प्रश्न है, परन्तु पौलुस द्वारा पूछे गए प्रश्न का मुख्य ज़ोर यह नहीं है। वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि यहूदी लोगों के पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि *परमेश्वर* ने उनके उद्धार के लिए हर उपाय कर दिया है। संदर्भ में, प्रश्न का अर्थ यह था कि ''जब तक उन्हें परमेश्वर द्वारा भेजा नहीं जाता अर्थात जब तक उन्हें ईश्वरीय आज्ञा नहीं है, वे कैसे प्रचार करेंगे?''

''भेजे'' शब्द का अनुवाद *apostello* से किया गया है, जिसका अर्थ ''बाहर भेजना'' (*apo* का अर्थ है ''से'')।[1] *Apostello* अंग्रेज़ी शब्द ''apostle'' का क्रिया रूप है, जिसका अर्थ है ''बाहर भेजा गया।'' पौलुस तथा अन्य प्रेरितों को जाने और सुसमाचार प्रचार करने के लिए प्रभु की ओर से *विशेष* आज्ञा मिली थी, परन्तु *apostello* इन कुछ लोगों तक सीमित नहीं है। मुझे और आपको भी बाहर जाकर सिखाने और प्रचार करने की ईश्वरीय आज्ञा मिली है। यह किसी दर्शन या ''दबा हुआ धीमा शब्द'' (1 राजाओं 19:12; KJV) ''के द्वारा नहीं'' बल्कि हमारे पास *लिखित रूप में* है:

> यीशु ने उनके पास आकर कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:18-20)।

खोए हुओं के साथ सुसमाचार बांटकर हम स्वयं प्रभु के समर्थन और अधिकार से ऐसा करते हैं।

(2) *परमेश्वर की योजना की अगली बात सुसमाचार का प्रचार करना है।* अपने वचन पाठ में पीछे की तरफ जाते हुए हम पढ़ते हैं, ''और *प्रचारक* बिना कैसे सुनें?'' (रोमियों 10:14ग)। यह नये नियम के वचनों में से ऐसा वचन है, जो प्रचार के महत्व को रेखांकित करता है (देखें 1 कुरिन्थियों 12:1; KJV)। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा:

> परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रकट होने, और राज्य को सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता हूं। कि तू वचन

को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा (2 तीमुथियुस 4:1, 2)।

परन्तु हमें समझना चाहिए कि रोमियों 10:14 में ''प्रचारक'' रविवार या अन्य अवसरों पर पुलपिट पर खड़े होने वाले आदमी तक ही सीमित नहीं है। यह शब्द *kerusso* है, जिसका अर्थ है ''घोषणा करने वाला होना।''[2] ''घोषणा करने वाला'' का मूल अर्थ ''भेजना'' के विचार के बहुत निकट है। पहली शताब्दी की घोषणा अधिकार वाले किसी व्यक्ति द्वारा दिया गया संदेश होता था, जिसे उस संदेश को संचालित करने के लिए बाहर भेजा जाता था। संदेश देने वाला चौराहों पर या बाज़ार में मुट्ठी भर लोग होने पर भी जो उसे मिले, को संदेश देते हुए देहात तक चला जाता था। एक अर्थ में प्रभु का ग्रेट कमीशन संदेश देने वाले के रूप में हर मसीही को भेजा गया है। कुछ लोग सार्वजनिक रूप में संदेश सुनाएंगे और अन्य व्यक्तिगत रूप में, परन्तु हम में से हर किसी को यह संदेश देना आवश्यक है।

परन्तु इस बात को समझ लें कि सामर्थ संदेशवाहक में नहीं है, बल्कि यह तो संदेशवाहक के संदेश में है। परमेश्वर की योजना के विषय में कहें तो वह संदेश क्या है? आयत 14 यह नहीं कहती परन्तु अगली आयतें यही कहती हैं। NASB में 15 और 16 आयतों में ''शुभ समाचार'' वाक्यांश है, यूनानी भाषा में आयत 15 में क्रिया रूप है, जबकि आयत 16 में ''सुसमाचार'' के लिए संज्ञा रूप शब्द *euangelion* है।[3] KJV में कहा गया है, ''उनके चरण कितने सुन्दर हैं जो *सुसमाचार* का प्रचार करते हैं। ... परन्तु उन सब ने *सुसमाचार* को नहीं माना'' (आयतें 15ख, 16क)। सुसमाचार यीशु का शुभ समाचार है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

आयत 17 संदेश को ''मसीह का वचन'' कहती है।[4] इसे वह वचन कहा जा सकता है जिसका प्रचार मसीह ने किया (मैकोर्ड) या मसीह के बारे में वचन (CEV; CJB; NLT)। मसीह के बारे में वचन में आयत 9 में बताए गए तथ्यों जैसे तथ्य शामिल होंगे। वह प्रभु है और परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया। शायद पौलुस ने ''मसीह का वचन'' वाक्यांश में इन अवधारणाओं को मिला दिया: ''वह वचन जिसका मसीह सामग्री और लेखक [दोनों] है।''[5]

''मसीह का वचन'' की व्याख्या चाहे जैसे भी की जाए, ज़ोर *मसीह* का प्रचार करने पर है पौलुस ने गलातियों से कहा, ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का'' (गलातियों 6:14क)। कुरिन्थियों को उसने बताया, ''क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:2)। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि पौलुस ने क्रूस के अलावा किसी अन्य विषय पर प्रचार नहीं किया। इसका अर्थ यह नहीं है कि (1) क्रूस के अलावा वह किसी बात को नहीं, और (2) क्रूस की तुलना में किसी और बात को नहीं ''जानता'' था।

हम में से जो लोग सिखाते या प्रचार करते हैं (जिसमें हर मसीही को शामिल होना चाहिए) उन्हें पौलुस से सीखने की आवश्यकता है। यदि हम अपने सुनने वालों के मनों में *विश्वास* डालना चाहते हैं तो हमें मसीह और उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने पर सिखाने और प्रचार करने को नज़रअन्दाज नहीं करना चाहिए। जब तक ''वह बड़ी पुरानी कहानी'' हमारे संदेश का केन्द्र नहीं होगी तब तक इसे *सुसमाचार* संदेश नहीं कहा जा सकता।

यदि हम दूसरों को शुभ समाचार बताते हैं, तो पौलुस ने कहा कि हमारे शरीर के दो अंग बड़े ही खूबसूरत हैं। हमें लग सकता है कि हमारे चेहरों में कशिश नहीं है या हमारे शरीरों में किसी प्रकार की कोई कमी है; परन्तु पौलुस ने कहा कि हमारे पास सुन्दर *पांव* हैं: ''जैसा लिखा है, कि उन के पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं'' (आयत 15ख)। पौलुस यशायाह 52:7 से उन्हें उद्धृत कर रहा था, जो यहूदी बंदियों के लिए बाबुल की दासता से छूटने की खुशखबरी लाए थे। पौलुस ने इन शब्दों का इस्तेमाल खोए हुओं के लिए यह शुभ समाचार लाने के लिए किया कि वे भी पाप की दासता से छुड़ाए जा सकते हैं।

जब मैं लड़का था, तो मुझे रोमियों 10:15 में पौलुस के शब्द बड़े उलझन भरे लगते थे। पहली बात तो यह कि आम तौर पर पांव शरीर के सबसे कम आकर्षित अंग माने जाते हैं। दूसरा अधिकतर प्रचारक जिन्हें मैं जानता था उनके पांव इतने बड़े थे कि कोई भी उन्हें सुन्दर पांव *नहीं* कहता होगा। बाद में मैंने संदेश देने वाले की अवधारणा को समझा: कि वह आदमी एक से दूसरी जगह संदेश को लेकर जाता है जब संदेश देने वाला खुशखबरी लाता है तो हो सकता है कि सैंडल में उसके पांव गंदे, फटे हुए, कठोर और यहां तक कि बदबूदार लगें, परन्तु वे पांव उसके सुनने वालों तक उसे उठाकर लाए थे। इसलिए उनकी नज़र में वे पांव ''सुन्दर'' थे। JB में यशायाह के इस उद्धहरण को इस प्रकार अनुवाद किया गया है: *''उनके पद चिह्न जो खुशखबरी लेकर आते हैं एक स्वागती स्वर है।''*

(3) *उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना की एक और बात है समझ और स्वीकृति के साथ सुनना है।* हमारे वचन पाठ में और पीछे जाते हुए, यह प्रश्न मिलता है: ''जिसके विषय में *सुना* नहीं उस पर विश्वास कैसे करें?'' (आयत 14ख)। सुसमाचार सुनाने की ज़िम्मेदारी प्रचारक पर है, परन्तु जिन्हें वह वचन सुनाता है उनकी भी जिम्मेदारी है कि वे सुनें। आयत 17 कहती है, ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' बीज बोने वाले का यीशु का दृष्टांत ज़ोर देकर बताता है कि वचन को सुनने वाले को ग्रहण करने वाला होना कितना आवश्यक है (मत्ती 13:3–9, 18–23)।

पौलुस ने उस समय में लिखा जब अधिकतर लोग पढ़ नहीं सकते थे। इसके अलावा हाथ से लिखे गए हस्तलेखों की प्रतियां बनाना आम आदमी के लिए बहुत महंगा था। यदि लोगों ने शुभ समाचार को *सुना* न होता तो अधिकतर लोगों को इसका कभी पता न चलता। आज अधिकतर लोग पढ़ सकते हैं सो आम तौर पर विश्वास परमेश्वर के वचन को *पढ़ने* से आता है (देखें 20:30, 31)। तौभी आज भी वचन को सुनने का अपना महत्व है। सुसमाचार की सामर्थ में (देखें रोमियों 1:16) प्रचारक का प्रभाव डाला जाता है, जो वास्तव में इस बात की पुष्टि करता है कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है, वह सत्य है।

14 और 17 आयतों में ''सुना,'' ''सुने,'' और ''सुनने'' शब्दों के लिए यूनानी शब्द *akouo* के सभी रूप हैं, जिससे हमें अंग्रेज़ी का ''*acoustic*'' का शब्द मिला है। इन आयतों में ''सुनना'' केवल उस प्रक्रिया का संकेत नहीं है जिससे सुनने वाले के विवेक में बोले गए शब्द दर्ज किए जाते हैं। संदर्भ संकेत देता है कि यह समझ और स्वीकृति के साथ सुनना है। जब यीशु उन लोगों से बात कर रहा था, जो उसकी शिक्षा को मानने से इनकार करते थे, तो वह कहता था कि चाहे उन्होंने उसकी बातें सुनीं, परन्तु उन्होंने सुनकर *समझी* नहीं (देखें मरकुस 4:12)।

परमेश्वर की योजना के इस भाग से आगे बढ़ने से पहले आइए पौलुस द्वारा पूछे गए प्रश्न के एक दिलचस्प विवरण को देखते हैं। इसे फिर से देखें: ''और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?'' (10:14ख)। यह सम्भव है कि पौलुस के कहने का अर्थ है, ''वे उस में विश्वास कैसे करेंगे *जिनके* बारे में उन्होंने सुना ही नहीं'' (देखें KJV; NIV), परन्तु ''जिसकी नहीं सुनी'' तो यूनानी धर्मशास्त्र का अधिक मूल अर्थ माना जाता है। पौलुस के मन में यह तथ्य हो सकता है कि जब हम ''मसीह का वचन'' सुनाते हैं तो मसीह हमारे *द्वारा* प्रचार कर रहा होता है। जब यीशु ने अपने चेलों को प्रचार करने के लिए भेजा था, तो उसने उनसे कहा, ''जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है; जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है'' (10:16क)। जिम मैक्गुइगन ने लिखा है:

> अपने संदेश देने वालों के द्वारा लोगों से सुलह करने का आग्रह मसीह कर रहा है। क्या यह अविश्वसनीय विचार नहीं है? क्या यह दी गई आज्ञा वाली घोषणा की शान बढ़ाना नहीं है (नहीं, शान से बढ़कर! ज़बर्दस्त शान)? सच्ची घोषणा में *मसीह* लोगों से उस पर भरोसा करने की विनती का है।[6]

(4) *परमेश्वर की योजना के अनुसार, सुसमाचार संदेश को मानना ही आज्ञाकारी विश्वास है।* यह हमें अपने वचन पाठ के पहले प्रश्न पर ले आता है: ''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें?'' (आयत 14क)। याद रखें कि पौलुस ने कहा कि ''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (आयत 17)। यदि हम निष्कपट मनों से ध्यान लगाकर सुसमाचार को सुनते हैं, केवल एक दिमागी कसरत के रूप में नहीं, तो इसका परिणाम विश्वास होगा। यह हमें रोमियों की पुस्तक में मुख्य अवधारणा अर्थात विश्वास की आवश्यकता पर ले आता है, यीशु ने कहा, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही [मसीहा] हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)।

रोमियों 10:14 वाला विश्वास मुर्दा, निष्फल विश्वास नहीं (देखें याकूब 2:17, 26) बल्कि एक जीवित, सक्रिय, आज्ञाकारी विश्वास है। हमारे वचन पाठ की आयत 16 देखें जो उन लोगों की बात करती है, जिनका ऐसा विश्वास *नहीं* था: ''परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया: यशायाह कहता है, कि हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति की है?'' ''कान लगाया'' यूनानी शब्द *hupakouo* का अनुवाद है (*akouo* से [''सुनना''] के साथ *hupo* [''अधीन'']).[7] *Hupakouo* ग्रहण करने के लिए सुनने का संकेत देता है जो अधीन होने और आज्ञा मानने का कारण बनता है। CJB में आयत 16 को इस प्रकार लिखा गया है: ''उन सब ने शुभ समाचार पर ध्यान देकर इसे माना नहीं है।'' कई अनुवादों में रोमियों 10:16 में *hupakouo* का अनुवाद करने के लिए ''आज्ञा मानना'' शब्द के रूपों का इस्तेमाल किया गया है (KJV; NRSV; NKJV; मेकोर्ड) है।[8]

मुझे पक्का पता नहीं है कि NASB में आयत 16 में *hupakouo* का अनुवाद ''आज्ञा मानना'' के रूप में क्यों नहीं किया गया। रोमियों के अन्य भागों में NASB में ''आज्ञाकारी'' और ''आज्ञा मानना'' के रूप में यूनानी शब्द के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल है (1:5; 6:17; 16:26), परन्तु यहां नहीं। शायद अनुवादकों को लगा कि ''कान लगाना'' से संदर्भ में ''सुनना'' और

७''विश्वास करना'' से बेहतर मेल खाता आज्ञापालन का विचार मिलता है। उनका विचार जो भी हो ध्यान रखें कि KJV में आयत 16 के पहले भाग का मूल अनुवाद है: ''परन्तु उन सब ने सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी है।''[9]

क्योंकि बात ऐसी है इसलिए यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि रोमियों 10:16 में ''आज्ञा मानने'' और ''विश्वास करने'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल अदल-बदल कर किया गया है (अन्य उदाहरणों के लिए, देखें यूहन्ना 3:36; इब्रानियों 3:18, 19)। फिर से KJV पर विचार करते हैं: ''परन्तु उन सबने सुसमाचार की *आज्ञा* नहीं *मानी* । क्योंकि [यशायाह] कहता है, प्रभु, हमारी बात किसने *मानी* है ?'' यहां पौलुस की बातें विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की कहीं और कही गई उसकी बातों से मेल खाती हैं। हमारा उद्धार विश्वास के आधार पर होता है, परन्तु यह एक रोमांचित, सक्रिय विश्वास है। लैरी डियन ने लिखा है, ''रोमियों 10 में पौलुस की बात 'विश्वास से धार्मिकता' के साथ 'आज्ञापालन' की आवश्यकता के विपरीत नहीं है, बल्कि धार्मिकता के *आत्मनिर्भर* [व्यवस्था के कामों] और मसीह पर निर्भर [विश्वास का आज्ञापालन] के बीच अन्तर स्पष्ट करने के लिए है।''[10]

''विश्वास का आज्ञापालन'' में क्या शामिल है (16:26; देखें 1:5) ? पौलुस ने पहले मन फिराव (2:4), अंगीकार (10:9, 10), बपतिस्मा (6:3-6), और शरीर के बजाय आत्मा के अनुसार चलने (8:4) पर चर्चा की थी। परमेश्वर की योजना के अन्तिम भाग में यह सब शामिल है।

(5) *योजना की अन्तिम बात प्रभु का नाम पुकारना है।* 14 और 15 आयतें इस उद्धहरण से पहले आती हैं: ''क्योंकि *जो कोई प्रभु का नाम लेगा,* वह उद्धार पाएगा।'' (आयत 13; देखें योएल 2:32)। हमारा विश्वास केवल कुछ तथ्यों की मानसिक स्वीकृति नहीं बल्कि मन से यीशु के शुभ समाचार को मानना है (आयतें 9, 10) और इसके कारण हम प्रभु और उसके मार्ग की ओर लौटते हैं। हमने इस पर चर्चा की थी कि 10:13 से मेल खाते वाक्यांश ''प्रभु का नाम पुकारना'' में शामिल है।

अब हमें परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना पर विचार करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए:

(1) ईश्वरीय आज्ञा

↓

(2) सुसमाचार का प्रचार करना

↓

(3) समझ और स्वीकृति से सुनना

↓

(4) आज्ञाकारी विश्वास

↓

(5) प्रभु का नाम पुकारना

पौलुस ने दिखाया (5) के बिना (4) के सम्भव नहीं था, (4) के बिना (3) के सम्भव नहीं था और इसी प्रकार से चलते हुए (1) तक। यहां एक मुख्य सच्चाई मिलती है कि जिन्होंने सुसमाचार सुनाया उन्होंने ईश्वरीय आज्ञा *पाई* है। परमेश्वर ने इस योजना को चालू किया था, जो यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए है (आयत 12)। इस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएल के उद्धार के लिए उपाय *किया* था।

एक व्यक्तिगत योजना (आयतें 13-17)

मनुष्य जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की यही योजना है। यह एक सम्पूर्ण योजना है यानी ऐसी योजना जो हर प्राण के उद्धार का कारण बन सकती है। परन्तु हर प्राण का उद्धार नहीं हुआ है। इसीलिए हम इस पाठ के शीर्षक में मिलते प्रश्न को पूछते हैं। परमेश्वर ने एक सम्पूर्ण योजना दी-सो क्या हुआ? उस प्रश्न के उत्तर पर चर्चा हम अगले एक पल में करेंगे; लेकिन क्या करने से पहले अभी मैं उन आयतों की अतिरिक्त प्रासंगिकता बनाना चाहता हूं, जिनका हमने अभी-अभी अध्ययन किया है।

मैंने पहले लिखा था कि इन आयतों का इस्तेमाल आमतौर पर मिशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है। ऐसा होने पर आम तौर पर ज़ोर ''भेजा'' शब्द पर दिया जाता है: ''जब तक भेजा न जाए तब तक कोई मिशनरी नहीं होगा [जिसमें आर्थिक रूप से उन्हें सहायता देना शामिल है]।'' परन्तु मैंने सुझाव दिया कि संदर्भ में ज़ोर लोगों को सिखाने और प्रचार करने के लिए *परमेश्वर के* आज्ञा देना (''भेजने'') पर है। क्या इसका अर्थ यह है कि इस आयत में स्थानीय या विदेश में मिशन कार्य करने का कोई लाभ नहीं है? नहीं इन आयतों में सुसमाचार प्रचार के लिए ज़बर्दस्त प्रेरणा है।

परमेश्वर की योजना की समीक्षा पर एक बार फिर से ध्यान दें और समझें कि मनुष्यजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की यह *एकमात्र* योजना है। अपने पाठ के आरम्भ में मैंने कहा था कि कई बार मुझे योजना ख, ग, या घ इस्तेमाल करनी पड़ती है। खोए हुओं के उद्धार के विषय में परमेश्वर के पास कोई योजना ख, ग या घ नहीं है। उसकी केवल योजना क ही है। सुसमाचार सिखाया जाना आवश्यक है ताकि जिम्मेदार लोग इसे सुन सकें, इस पर विश्वास कर सकें और इसकी बात मान सकें।

साम्प्रदायिक कलीसियाओं में खोए हुओं के उद्धार की कोशिश में कई मानव निर्मित योजनाएं बनाई गई हैं, जिनमें (जिनमें ''पवित्र आत्मा का सीधा कारण'') भी है। यदि हम सतर्क नहीं हैं तो हम भी वैकल्पिक योजनाएं बनाने के दोषी हो सकते हैं। प्रचार करने के मेरे दशकों के अभ्यास में मैंने ऐसे कई ढंगों के प्रस्ताव सुने हैं जिन्हें और बपतिस्मे कराने और कलीसिया के बड़े विकास की ''गारंटी'' बताया जाता है। इनमें से कुछ ढंगों की खूबियां हैं, परन्तु हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि जब सब कुछ कहा गया और किया गया है, तो विश्वास *वचन को* सुनने से आता है। जब तक सुसमाचार बताया नहीं जाता, कोई विश्वास नहीं कर सकता और किसी का उद्धार नहीं हो सकता।

कई साल पहले लोग ''जीवन शैली के इवैंज़लिज़्म'' की बात से बड़े रोमांचित होते थे। मैंने इस ढंग पर कई किताबें पढ़ी हैं और इस पर पढ़ाया भी। इस ढंग की सराहना की जानी चाहिए कि

वह हमारे और दूसरों के बीच की खाई को भर सकता है, जिससे हम उन तक सुसमाचार पहुंचा सकते हैं। परन्तु मुझे डर है कि कई लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि वे केवल ''मसीह जीवन शैली'' जीने से ग्रेट कमीशन को पूरा कर सकते हैं। यह सच है कि लोग तब तक मसीह का संदेश हम से नहीं सुनना चाहेंगे जब तक हमें मसीह पर केन्द्रित जीवन बिताते न देंखे। तौभी विश्वास किसी को मसीही के रूप में रहते देखकर नहीं आता। यह मसीह का संदेश *सुनने* से आता है। दूसरों को सिखाने के लिए हम जिस भी ढंग का इस्तेमाल करें, अन्त में हमें यीशु का संदेश उन तक पहुंचाने के लिए *शब्दों में* बताना ही पड़ेगा।

प्रभु ने हमें ''आगे बढ़ने के आदेश'' बहुत पहले दे दिए थे (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। रोमियों 10:14, 15 से हमें उसकी आज्ञा को पूरा करने का अतिरिक्त लाभ मिलना चाहिए। डेल हार्टमैन ने एक बार कहा था कि ''कलीसिया का एक मुख्य उद्देश्य स्वर्ग की जनसंख्या को बढ़ाना है।''[11] क्या हम उस उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं?

यहूदियों की एक समस्या थी (10:16-21)

समस्या विश्लेषण (आयतें 16, 17)

आइए अपने वचन पाठ में दिए गए मुख्य भाव में वापिस चलते हैं: यहूदियों के उद्धार के लिए परमेश्वर के पास एक सम्पूर्ण योजना थी। अफ़सोस की बात यह है कि यहूदियों ने उसे सुनने से इनकार कर दिया था, विश्वास करने से इनकार कर दिया था और यीशु के अधीन होने से इनकार कर दिया था। आयत 16 का आरम्भ होता है ''परन्तु उन सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया [सुनकर मानने के लिए]'' (आयत 16क)। संदर्भ में ''उन'' यहां यहूदियों को कहा गया है (देखें NIV)। ''उन *सब* ने उस समाचार पर कान न लगाया'' पौलुस द्वारा दिया गया एक विशेष अल्पवक्तव्य है क्योंकि इस्राएलियों के बहुत थोड़े से प्रतिशत ने (''बचे हुए''; 9:27) ने ही सुसमाचार को माना था।

पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर के लिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी: ''यशायाह कहता है, कि हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति की है?'' (आयत 16ख)। यह उद्धरण यशायाह 53 की आरम्भिक आयत से लिया गया है, जो मसीहा को दुखी सेवक के रूप में दर्शाता महान अध्याय है। अधिकतर यहूदी मसीहा को शक्तिशाली विजयी नायक के रूप में मानने को प्राथमिकता देते थे। इसी कारण उनमें से कइयों को विश्वास नहीं था कि यशायाह 53 मसीहा से जुड़ी भविष्यवाणी थी (देखें प्रेरितों 8:32-34)। ऐसी ही पूर्व धारणा के कारण मसीहा (यीशु) जब आ गया तो उन्होंने उसे नकार दिया (देखें यूहन्ना 12:37-41)।

आयत 17 में पौलुस ने रोमियों 10:13-15 में बताई गई योजना की समीक्षा पर एक संक्षेप विवरण दिया: ''अत: विश्वास सुनने से [मानकर] और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' यह एक सम्पूर्ण योजना थी, तो फिर इस योजना में गड़बड़ किसने की? यहूदियों ने स्वयं ही गलती की क्योंकि उन्होंने यीशु के संदेश को गम्भीरता से सुनने से इनकार किया। पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने यशायाह 6:10 से उद्धृत किया था: ''क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं ... कहीं ऐसा न हो कि वे ... कानों से सुनें और मन से

समझें और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं'' (मत्ती 13:15)। कुछ यहूदी लोग उस छोटे बच्चे की तरह थे जो अपने कानों पर हाथ रख लेता है ताकि उसे किसी साथी की बात सुनाई *न दे सके*।[12] अन्य मेरे जैसे थे जब मेरे मन में कुछ और भरा होता है और मैं सुनता *नहीं हूं*।[13] जो भी कारण हो यहूदी लोग सुनने में नाकाम रहे इसलिए वे विश्वास करने में नाकाम रहे।

आपत्तियों का उत्तर दिया गया (आयतें 18-21)

पौलुस को मालूम था कि यहूदियों के लिए यह मानना कठिन है कि यह उनकी गलती थी कि परमेश्वर ने उन्हें नकार दिया था। इसलिए उसने उन्हीं आपत्तियों को बताया जो कोई कर सकता था। पहली आपत्ति यह थी कि शायद यहूदियों को सुनने का अवसर नहीं मिला था: ''परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्होंने नहीं सुना?'' (रोमियों 10:18क)। पौलुस ने उत्तर दिया, ''सुना तो सही'' (रोमियों 10:18ख) और फिर उसने एक और पत्र उद्धृत किया: ''उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं'' (रोमियों 10:18ग)। यह उद्धहरण भजन संहिता 19:4 से लिया गया है। संदर्भ सूरज, चांद और तारों की विश्वव्यापी गवाही की बात करता है। पौलुस ने भजन संहिता 19 की भाषा का इस्तेमाल यह घोषणा करने के लिए किया कि सुसमाचार का प्रचार आकाशीय पिण्डों के प्रकाश की तरह फैल रहा था।

''सारी पृथ्वी पर'' और ''जगत की छोर'' वाक्यांशों का अर्थ यह नहीं है कि सुसमाचार पौलुस के रोमियों का पत्र लिखने के समय हर सम्भावित स्थान में सुनाया जा चुका था। बाद में इस पत्र में पौलुस ने स्पेन जाने की अपनी इच्छा बताई (रोमियों 15:28), वह देश जहां मसीह को ''पूछते भी'' नहीं थे (आयत 20)। रोमियों 10:18 की शब्दावली का उद्देश्य यह पक्का करना था कि *यहूदियों* को सुसमाचार सुनने का अवसर दिया गया था। उस समय अधिकतर यहूदी भूमध्य सागर के आस पास रहते थे, इसमें से अधिकतर क्षेत्र में स्वयं पौलुस ने ही सुसमाचार पहुंचाया था।

दूसरी आपत्ति जो पौलुस के मन में आई वह यह थी कि चाहे यहूदियों ने सुना तो था, परन्तु उन्हें वास्तव में *समझ* नहीं आई कि यह क्या हो रहा है। इस कारण, मानवीय तर्क के अनुसार उन्हें जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता: ''फिर मैं कहता हूं। क्या इस्राएली नहीं जानते थे?'' (आयत 19क)। इसके लिए पौलुस का उत्तर था कि उन्हें पता होना और समझ होनी *चाहिए* थी क्योंकि जो कुछ भी हुआ था वह वचन में पहले से बता दिया गया था।

पौलुस ने कहा कि ''पहिले तो मूसा कहता है, कि 'मैं उन के द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे मन में जलन उपजाऊंगा, मैं एक मूढ़ जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलाऊंगा' '' (आयत 19ख)। यह उद्धरण व्यवस्थाविवरण 32:21 से लिया गया है। यह इस्राएलियों के धन्यवाद न करने और आज्ञा न मानने के लिए मूसा द्वारा उन्हें दोषी ठहराए जाने की बात का भाग था। मूसा भविष्यवाणी कर रहा था कि परमेश्वर इस्राएल को दीन करने और दण्ड देने के लिए बाहरी जातियों का इस्तेमाल करेगा। ''जो जाति नहीं'' वाक्यांश में पौलुस ने होशे 1:10 में मिलने वाली अवधारणा को देखा। रोमियों 10:19 में उन्हें ''जो जाति नहीं'' वे वही लोग हैं, जिन्हें रोमियों 9:26 में ''मेरी प्रजा नहीं'' कहा गया था, अन्य शब्दों में वे अन्यजाति थीं। जहां तक यहूदियों की बात थी, अन्यजाति लोग ''बिना समझ के'' थे (2:19 पर टिप्पणियां देखें)।

अगले अध्याय में पौलुस ने यहूदियों को अन्यजातियों को स्वीकार करके आज्ञा मानने के

लिए प्रेरित करने के लिए परमेश्वर की योजना का खुलासा किया (देखें 11:11, 13, 14)। यहां वह केवल इतना कह रहा था कि परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों को स्वीकार करने से यहूदियों को चौंकना नहीं चाहिए क्योंकि मूसा ने यह पहले ही बता दिया था। ''मूढ़ जाति'' वाक्यांश में भी कोई संकेत हो सकता है: यदि अन्यजाति लोग जिन्हें ''मूढ़ जाति'' कहा गया परमेश्वर की योजना को समझ सकते थे, तो यहूदी लोग जिन्हें एक के बाद एक परमेश्वर के ठहराए हुए शिक्षकों की आशीष थी, इसे समझ जाना *चाहिए* था। उनके पास कोई बहाना नहीं था।

एक बार फिर पौलुस ने पुराने नियम से उद्धृत किया: ''फिर यशायाह बड़े हियाव के साथ [और स्पष्टता] कहता है [प्रभु के लिए बोलते हुए], कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे, उन्होंने मुझे पा लिया: और जो मुझे पूछते भी न थे, उन पर मैं प्रकट हो गया'' (10:20)। यह उद्धरण यशायाह 65:1 से लिया गया है। मूल संदर्भ में, यह शब्द सम्भवतया विद्रोही इस्राएल के लिए इस्तेमाल किए गए थे; परन्तु पौलुस ने अन्यजातियों के लिए लागू होने वाले नियम को समझा। पौलुस 9:30 में बताई सच्चाई को दोहरा रहा था कि अन्यजाति लोग जो ''धार्मिकता की खोज'' या ''परमेश्वर की खोज'' नहीं करते थे, इन्हीं लोगों ने इन दोनों को पा लिया क्योंकि उन्होंने उनके मनों को छूने की सुसमाचार के संदेश को अनुमति दी।

यदि यहूदियों को सुसमाचार सुनने का अवसर मिला, और यदि उन्हें परमेश्वर की योजना की समझ होनी चाहिए थी, तो दिक्कत कहां थी: स्पष्ट रूप से बताया गया है कि समस्या यह थी कि यहूदी लोग ढीठ और विद्रोही थे। पौलुस ने यशायाह से एक और उद्धरण का इस्तेमाल किया: ''परन्तु इस्राएल के विषय में वह यह कहता है कि मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न मानने वाली और विवाद करने वाली प्रजा की ओर पसारे रहा'' (10:21)। यह यशायाह 65:2 से लिया गया है (पौलुस द्वारा अभी उद्धृत की गई एक आयत के आगे वाली)। इस्राएल जाति का इतिहास पढ़ें। यह अविश्वास और आज्ञा न मानने की कहानी है। इस्राएली बार-बार और लगातार परमेश्वर का दिल तोड़ते थे। जैसा उन्होंने अतीत में किया था, वैसे ही वे अपने छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना के सम्बन्ध में पौलुस के समय में थे। NASB में उन्हें ''obstinate'' कहा गया है जिसका अर्थ है ''हठी।'' NLT में कहा गया है ''वे मेरी आज्ञा तोड़ते रहे और मुझ से विवाद करते रहे।''

क्या यहूदियों को आशा थी? यशायाह से लिए गए उद्धरण के इन शब्दों को नज़रअन्दाज न करें, ''मैं सारा दिन अपने हाथ ... पसारे रहा'' परमेश्वर को धीरज करने वाले, प्रेमी माता-पिता के रूप में दिखाया गया है जो अपनी बाहें फैलाए, अपने विद्रोही बालक के वापस आने पर उसका स्वागत करने को तैयार है। यदि यहूदी लोग परमेश्वर को मानकर उसकी योजना को मान लें तो उन्हें अपनी स्नेही बाहों में ले लेगा। परन्तु रोमियों 11 के अपने अध्ययन में हम इस पर और बात करेंगे।

सारांश

परमेश्वर ने मनुष्य जाति के उद्धार के लिए एक योजना बनाई, जो सम्पूर्ण योजना है।[14] अफ़सोस कि तब से लेकर अब तक यहूदी लोग विश्वास करके उसकी मानने से ढीठ होकर इनकार करते रहे हैं। परन्तु हमें यहूदियों पर आरोप लगाने वाली उंगलियां करने से बचना चाहिए। हमें इसे अपने ऊपर लागू करने की आवश्यकता है। हम में से हर एक को पूछना चाहिए, ''क्या

मैंने सुसमाचार को सुना है, ... मसीह में विश्वास किया है ... मसीह की आज्ञाओं का पालन किया है।'' डेल हार्टमैन ने हाल ही में लिखा है कि संसार की एक ही बात जो वहां नहीं है जिसे परमेश्वर वहां चाहता है और वह नहीं है जो परमेश्वर इससे करवाना चाहता है, मनुष्य है।[15] सूरज, चांद और तारे आकाश के उस घेरे में घूमते हैं जिसमें परमेश्वर ने उन्हें ठहराया है। यहां तक जानवर भी वैसे ही व्यवहार करते हैं जैसे परमेश्वर ने उन्हें बनाया है। केवल मनुष्य वह बनने से इनकार करता है जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता है और वह नहीं करता जो परमेश्वर चाहता है कि वह करे। *आप* क्या करते हैं? क्या आप वही हैं जो परमेश्वर चाहता है कि आप हों? क्या आप वही कर रहे हैं, जो परमेश्वर आपसे करवाना चाहता है।

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनियर., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 560. [2]वही, 481. [3]*रोमियों, 1* पुस्तक में ''मुख्य बात (1:16, 17)'' पाठ में शब्द पर नोट्स देखें। [4]KJV ''परमेश्वर का वचन'' है। आरम्भिक हस्तलेख का प्रमाण ''मसीह का वचन'' के लिए प्राथमिकता का संकेत देता है। यदि आप दोनों अनुवादों को मिलाना चाहते हैं, तो आप ''मसीह के बारे में परमेश्वर का वचन'' के रूप में विचार कर सकते हैं। [5]जेम्स डी. जी. डन, *रोमन्स 9-16,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 38ख (डलास: वर्ड बुक्स, 1988), 623. [6]जिम्म मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 312. [7]वाइन, 438. [8]अन्य अनुवाद (विशेषकर एक आदमी के अनुवाद) *hupakouo* में आज्ञापालन के किसी प्रकार के संकेत को मिटाने के लिए गहराई तक चले जाते हैं, परन्तु यह अभी भी वही है। [9]2 थिस्सलुनीकियों 1:8 NASB का अनुवाद ''सुसमाचार की आज्ञा मानना'' के रूप में मूल यूनानी शब्दों वाला ही है। ''सुसमाचार की आज्ञा मानना'' वाक्यांश के विषय में, *रोमियों, 2* पुस्तक में ''उपदेश का वह सांचा (6:3-6, 17, 18)'' पाठ का परिचय देखें। [10]लैरी डियसन, *''दि राइटेसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 260.

[11]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 16 नवंबर 2003 को दिया गया प्रवचन। [12]जहां आप रहते हैं वहां के लिए उपयुक्त उदाहरण का इस्तेमाल करें। जहां मैं रहता हूं वहां मैं उन नवयुवकों की बात कर सकता हूं जो कानों में एयरफोन लगाकर ऊंचा संगीत सुनने के समय दूसरों की बात सुन नहीं सकते। [13]मेरे पूरे जीवन में, इसमें मुझे किसी और और बात से बढ़कर परेशानी में डाला है। [14]आप उस योजना की समीक्षा करें। [15]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, स्प्रिंग 2005 को दिया गया प्रवचन। भाई हार्टमैन ने पुरुष और स्त्रियों दोनों को शामिल करते हुए सामान्य अर्थ में ''मनुष्य'' शब्द का इस्तेमाल किया। [16]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 313-15.